अन्तर्नाद

**

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

अन्तर्नाद

[राष्ट्रिय प्ररोचना]





रचयिता

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

सुमन-प्रकाशन-

प्रथम संस्करण
(१९७०)

मूल्य—१.५०

प्रकाशक
मैथिली - मन्दिर
राजकुमारगंज : दरभंगा

मुद्रक
श्री भूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस
राजकुमारगंज : दरभंगा

बिन्दु-विसर्ग :—

नाद अव्यक्त रहितहुँ, स्वर - माध्यमे अन्तर्वेग केँ अभिव्यक्ति दैछ। आवेग संचारी रहितहुँ, जखन कोनो महत्त्वकेँ उद्‌बोधित करैछ तखन ओहो 'स्मरति नूनमबोधपूर्वं भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि'।

यदि रूप-लुब्ध वयस-उद्‌बुद्ध लौकिक राग रसत्वकेँ प्राप्त करैछ—यदि तोतर बोल, अनिमित्त हास, बालचापल्य प्रभृतिकेँ रस-पदवी भेटैछ—दुष्टक प्रति क्रोध, दुःखीक प्रति करुणा, भय-बीभत्स-घृणा धरि रसमाल्यक प्रसून बनैछ, तँ कोनो कारण नहि जे मातृभूमिक प्रति, संस्कृति - सभ्यताक प्रति, चिरन्तन श्रद्धा - साधनाक प्रति, मानवक गौरवोल्लास सहज रीतिएँ, प्राणप्रीतिएँ नहि उद्‌वेलित-उद्‌बोधित हो।

लक्ष-लक्ष देशभक्त राष्ट्रोत्थानक हेतु आत्मवलिदान करैत अयलाह, करैत जयताह; फाँसीपर झुलैत अयलाह, झुलैत जयताह; सर्वस्वार्पण भावनासँ जीवन होमैत अयलाह, होमैत रहताह; तिल-तिल खटलाह, खटैत रहताह। तखनहु एहन व्यापी, स्थायी, आक्रान्त, राग-विरागमयी भावनासँ ओतप्रोत राष्ट्रिय भावनाकेँ आस्वादोपयोगी नहि कही तँ 'जनानने कः करमर्पयिष्यति'?

विश्व-साहित्यक विशाल कक्षमे देशप्रेमक एवं राष्ट्रसंस्कृतिक भावनासँ भरल-पुरल, कल्पनाप्रचुर, शिल्प-मधुर एवं भावोद्वेगी विषय-

वितानसँ संभूत काव्य - साहित्य प्रचुरतया, नित्यतया प्रस्तुत अछि। तखन रसभावविद् द्वारा एकर नीराजना स्वाभाविके मानल जायत।

....

प्रस्तुत 'अन्तर्नाद' मे जे स्वर-ध्वनि अनुनादित अछि ओ कोनो वीणाक रंजक अनुरणनक संग संगति लेल नहि, ने झालि-मृदंगक तरंगमे रंगत आनबा लेल। ई ने रणभेरीक निनादक प्रतिध्वनि थिक, ने बैंड बाजाक तालपद्धतिपर पैरेडक पद्धति थिक। ई की थिक से स्वयं कविते कहत।

एहिठाम कविता कविक कोनो कथा नहि थिक—प्रत्युत कविक प्रति कोनो अन्तर्यामिनी प्रेरिकाक अन्तर्व्यथा थिक, जे कवि-मानसकेँ एक बेर हिन्दोलित बिनु कयने नहि रहि सकैछ।

हमर कविपर जे एकर प्रभाव पड़ि गेल हो ताहि लेल कोनो सफाइ देबाक प्रयोजन नहि; प्रयोजन अछि समानधर्माकेँ कवि-कविताक अनुरोध-प्रबोध सुनयबाक। से यदि सुना सकलहुँ—अपन अन्तर्नाद यदि आनो अन्तरमे अनुनादित कय सकलहुँ—तँ सम्पूर्ण सन्तोष उपलब्ध रहत।

—'सुमन'

पुनश्च—

अन्तर्नादक अधिकांश तहिये लिखल गेल जहिया अपन अखंड प्रेमश्रद्धास्पद, राष्ट्रधर्मक महान् चिन्तक स्व० दीनदयाल उपाध्याय जी जीवित छलाह; आइ हुनकहि (१९६१ सँ ६७ धरि सप्तवर्षव्यापी प्रेम-सामीप्यक) पुण्य स्मृतिमे साश्रु सोद्वेग ज्वलित हृदयेँ समर्पित करैत उच्छ्वसित छी।

(उपाध्याय बलिदान दिवस, ११ जनबरी १९७०)

भारतीय एकात्म मानववादक मन्त्रद्रष्टा
खण्डितहुमे अखण्ड भारतक अन्यतम सन्देष्टा
विद्या - विनय, चिन्तन - अनुशीलन, स्वाध्याय - प्रवचन;
तर्क - विवेक एवं ज्ञानकर्मक अनन्य समन्वेता
लोकप्रिय जननेता, अन्यतम आधुनिक राष्ट्रनिर्माता

स्वनामधन्य

स्व० पं० दीनदयाल उपाध्यायक

बलिदानी स्मृति - अभियानमे

प्रेम-श्रद्धा पुरस्सर साश्रु समर्पित

●

(१)

देव - दल दानव क मे चलइछ युग - युग समर अनंत
अंधकार - ज्योतिक बिच तनइछ अहर्निस द्वंद्व दुरंत
सत–असतक संघर्ष निरन्तर, धर्म - अधर्म भिड़ंत
होइछ क्यो अवतरित भूमि पर भूमा निष्ठावंत

(२)

राम - कृष्ण वा दया - विवेक क रूप - रूप अनुरूप
सिद्ध - बुद्ध वा तिलक - सुभाष क भाषा - भाव अनूप
शंकर - रामानुज क दर्शनो, शिवा - प्रताप क शक्ति
चाणक्य क चतुरंत राष्ट्र निर्माण क प्रखर प्रसक्ति

(३)

चन्द्रगुप्त केर कर्मठ तारुण्य क प्रचंड हुंकार
मुट्ठी भरि हड्डी मे ज्वालामुखी क तप्तोद्गार
व्यक्ति समाज समर्थ परस्पर, अर्थ धर्म - विनियुक्त
कयलन्हि जे युगधर्म विश्वहित राष्ट्रपक्ष अनुयुक्त

(४)

कूट - कपट केर साधनसँ नहि होय साध्य सत् सिद्ध
रक्त क्रान्ति-सँ लोकतंत्र केर आराधना विरुद्ध
चीर हरण द्रुपदाक मूल विपदाक बुझाय उदंत !
खंड अपूर्ण, अखंड भारत क पर्वोद्योग तुरंत

(५)

व्रज रज केर मणि पूत महाभारत रचना मे व्यग्र
धर्म राज हित कयल शान्ति अनुशासन पर्व समग्र
राष्ट्र पार्थ - सारथी सेव्य सेवक स्वयमेव उदात्त
संग संघटित वलिदानी कत राष्ट्र - पुत्र अवदात

(६)

व्याध बाण सँ बेधल जाइछ युग - युग माथुर कृष्ण
किन्तु हुनक रणगीतेँ उर बल प्रेरित प्राण सतृष्ण
'क्लैव्यं मा गम' 'सतत अनुस्मर युध्य च' शुभ संदेश
मातृभूमि हित 'पततु काय' जय राष्ट्र स्वधर्म स्वदेश

(७)

तिल तिल दय सिनेह हृदय क जे जोगल जीवन-बाती
एखनहु ज्वलित प्रदीप शिखा मे द्योतित देशक थाती
आलोकित देहली मातृमंदिर क आंतरिक द्वार
जय हे अमर पुजारी ! अर्पित सर्वस्वम् उपहार

वियोग-विमन —'सुमन'

स्वरारोह

भारत-सूक्त

य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम् ।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम् ।।

—अथर्व

धरती ओ आकाश सुविस्तृत अन्तरिक्ष अन्तर्वर्ती ।
हम करइत छी इन्द्रदेवकेँ स्तुति जे दिव्य चक्रवर्ती ।।
विश्वामित्र वास्तविक विश्वक मित्र ब्रह्मवादी चिन्मय ।
हुनक वेद-विद्याबल भारतवासी जन हो तेजोमय ।।

—'ऋचालोक'

प्रियवर श्री रामदेव बाबू को सादर
— सुरेन्द्र (सुमन)
1।1।76

अन्तर्नाद

[राष्ट्रिय प्ररोचना]





रचयिता

श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन'

भूमिका

नहि विधा अभिधाक ई,
समिधा न ई कवि सृष्टि यज्ञ क।
विज्ञ बोल न, अज्ञ घोल न,
स्वर मुदा जननी - कृतज्ञ क॥

❀

पूर्व योग, प्रयोग पश्चिम,
समय दक्ष प्रदक्षिणा थिक।
उत्तरे दिक् - काल व्यापी,
कवि ! हमर ई लक्षणा थिक॥

❀

न वा शाब्दिक रंजना,
वा आर्थिकी दृग - अंजना ई।
हमर अन्तर्ध्वनि क केवल,
कवि ! सहज अभि व्यंजना ई॥

—:::—

आइ मानव - आपदा हरबा क
हित पद - संपदा हो ।
आइ त्रिपदा द्विज गता नहि,
जनपद क हित प्रतिपदा हो ॥

जय घोष

जयतु शक्तिमयी, समर बिच अमर-रिपु उद्वेलिनी।
जयतु भक्तिमयी, चिरन्तन चारु सत् चित् केलिनी॥
भुक्ति - मुक्तिमयी मही, श्री–ह्री वरनि संकेतिनी।
कर्म गति, थिति ज्ञान, नित चित भरतभूमि निकेतनी॥

अन्नपूर्णा सङहि अवनी धातु मणि लक्ष्मी खनी।
श्रुतिमयी वाणी अङहि भारत महाशक्ति क धनी॥
कतहु गिरिजा, सिन्धुजा कहुँ, वेदजा सुरधुनि कतहु।
कतहु कमला सजल गमला पल्लवित पुष्पित लतहु॥

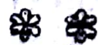
कतहु पद्मिनि हस्त शंखिनि, कतहु चित्रिणि चित्रिता।
शान्त ललित उदात्त उद्धत भूमिका कत भिन्नता॥
विश्वमंच क रूप शोभा भव - विभव उन्नायिका।
जयतु ऋतु-ऋतु कृति-प्रकृति कत रूप नवरस नायिका॥
पीत रक्त सितासिता कत वर्ण एकत रंजिता।
द्रविड द्रुतपद, वन्य गद्गद, स्वरित श्रौत प्रपंचिता॥

वयो - वृद्धा ज्ञान - सिद्धा विश्व - श्रद्धा वर्धिता।
जय सनातनि चिरपुरातनि आदि - अन्त - विवर्जिता॥
नित्य नूतन - वैभवा जय षोडशी सकला कला।
भारती धरती सदैव पुनर्नवा शिशु शशि बला॥

सतत गर्वोन्नत शिखर उर - सागर क गंभीरता।
बाहु साल विशाल, प्रतिभा परिसरहु उर्वर मता॥
शान्त स्वच्छ गभीर मानस फलित कानन कामना।
मलय चामर पवन पुलकित चन्द्र चर्चित चन्दना॥
दुर्ग दुर्गम अद्रि तुंग तरंग सिन्धु दिगंगना।
सिंहवाहिनि रहथु दाहिनि शिव क शक्ति चिरन्तना॥

बाध अंचल अन्नपूर्णा, कंठ गीता माधुरी।
कुरुक्षेत्र क खेत अभिमत, रुचिर सप्तपुरी पुरी॥
ध्वनित मेदुर मेघ मन्द्र मृदंग सिन्धुर रागिनी।
नृत्य - निरत मयूर नूपुर झिंगुरी झनकारिणी॥
उपवन क डाली भरल माली स्वयं कुसुमाकरे।
धूप दीपो भानु चाने, पाद्य गंगोदक करे॥
कोटि माथ क नमन, स्तवन क गीत अगनित कंठ स्वर।
मन्त्र 'वन्दे मातरम्' उच्चरित उर उर उच्चतर॥

हिम निबन्धिनि, सेतुबन्धिनि, सिन्धुसन्धिनि भारती।
आहिमाचल - सेतु सन्तति नित उतारथि आरती॥



महातथ्य

आइ पुनि गोकुल - गली मे
किऐ हमरा बजा रहलहुँ ?
शरद चंद क यामिनी मे
किऐ व्रज वन सजा रहलहुँ ?
किऐ यमुना - पुलिन पुलकित
कय रहल छी नयन नलिनें ?
किऐ मधुमय समय पुनिम क
पर्व पुजबी मलय पवनें ?

सजनि ! राधा विरह - बाधा
दूर करबा लय न आयब।
आइ वृन्दा - कुंज मे किन्हु न
हम रस रास गायब॥

Scanned by CamScanner

हस्तिनापुर इन्द्रप्रस्थ क
दृश्य दुर्गत द्यूत कैतव।
सुनि रहल छी जखन शकुनि क
दाओ-पेंचक निधिन करतब ॥
एकवसना द्रौपदी केर
लाज अंचल जखन लुंठित।
गेल गलि-पचि पंचजन
युगपुरुष पौरुष परुष कुंठित ॥
टेर कृष्णा केर कृष्ण क
कान धरि द्रुतगति सुनयबै।
असह केश क कथा केशव कें
खनहु बिसरय न देबै ॥
द्वारका प्रासाद सँ रणछोड़ कें
अरि - रंग - मंचे।
रण - निमन्त्रण देब, छूटत
छलहि जत गृह - रस प्रपंचे ॥
पार्थसारथि हाथ मे रथ—
रासि देब थम्हाय जा कय।
पांचजन्य क घोष मे
गीता क अमृतऽध्वनि सुना कय ॥

× ×

-:: अन्तर्नाद ::-

व्यास व्यस्त सरस्वती - तट
महाभारत विरचैना हित।
तुरित गणपति केँ जुमायब
चेतना दय लिखना हित॥
पार्थसारथि रचथु भारत
महा तथ्य सुझा रहल अछि।
मधुर - माहुर भागवत रस-
रास एखन बुझा रहल अछि॥

रण - रस

आइ नहि बंसी क सुर मे
अपन कंठ क धुनि सजायब।
आइ नहि वीणा क लय मे
सरस स्वर निर्भर मिलायब॥
आइ नूपुर पहिरि नाचय
जैब नहि बनि नृत्य - बाला।
आइ रसिक क हृदय - दोला
भुलब नहि भए कुसुम माला॥
आइ क्रौंची जखन क्रन्दन
करय उर विह्वल अधीरे।
व्याध बाण क लक्ष्य बनले
प्रिय जकर तमसा क तीरे॥
अग्नि-वीणा लय एखन कवि !
जाय दी द्रुतपदें हमरा।
श्लोक परिणत होय जहि सँ
शोक - धुनि से उठय लहरा॥

× ×

जनस्थान मसान बनइछ,
अगस्त्य क दिग्देश दंडित ।
आइ खर - दूषण क दोषेँ
पुनि पवित्र अरण्य खंडित ॥
दस सूर्पनखा नचै अछि
विश्व वन बिच सुन्दरी बनि ।
कत कबंध प्रबंध मे अछि
तपोवन उपटैव मन गुनि ॥

ब्रह्मकुलहु क शैवदलहु क
व्यक्ति शक्ति क दुरुपयोगी ।
ज्ञान हत विज्ञान बाधित
दनुज मनुज क रक्तभोगी ॥
यज्ञ बनइछ अज्ञ संज्ञक,
तप क पुनि संताप नामे ।
अर्थ काम सदर्थ, लुंठित
धर्म मोक्ष अनर्थ - धामे ॥

धनुष्कोटि क प्रणय पण केर
वणिक सागर पार कय यदि ।
जुटि जुटय दशमुख विमुख
धरतीसुता केर न्यार कय यदि ॥

तखन कोनहु वीर्यवान क
लोक मे अन्वेषणा हित ।
आदि कवि कौशिक क हाथेँ
करथु अभिनव योजनान्वित ॥

नहि प्रणय पण परिणय क
नृपनय क थिक ई रूप रेखा ।
असुर उद्वासन क हित
बनवास पूर्वहिँ रचित लेखा ।
मैथिली हरणार्थ प्रस्तुत
कपट कंचुक हरिस कंचन ।
किन्तु मायावी क कथमपि
चलि न सकतै आइ वंचन ॥
लक्ष्मण क रेखा विधुव केँ
टपि सकत नहि छद्मवेषा ।
आइ सीता केँ सजग कय
रचब अभिनव कथा रेखा ॥

कौशिक क उत्तर कुटी पुनि
ज्वलित गैरिक अग्निवर्णा ।
दक्षिणापथ अगस्त्याश्रम
शस्त्र - शास्त्र प्रशस्त पूर्णा ॥

शास्त्रहु क संस्कार तखनहि
जखन अस्त्र क झनत्कारे ।
शान्तिहु क सत्कार तखनहि
प्रतीकार क चमत्कारे ॥

अनल आहुति सहित रण—
आहूति युगपद संचिता हो ।
मनु क अनुशासन धनु क ध्वनि
मुनि मनुज मन अंचिता हो ॥

× ×

आदि कवि केर कंठ बसि
दशवदन वध हित राम बजेबी ।
आइ रामायण क रण-रस
कुश-लवक गर सजग सजेबी ॥

—:::—

नव पुराण : नव इतिहास

ने पुराण क वस्त्र पुरना, नग्नवसना ने नवीना ।
अंतरंग क अंग शुचि बहिरंग रुचि रंजन प्रवीना ॥
आइ नव परिवेश शेष विशेष वेष क रचब रचना ।
कवि ! हमर छवि आँकबे नव वृत्त प्राची-पटल घटना ॥
नवयुग क अवतरण, नव प्राचेतस क संबोधना हित ।
सूत-शौनक नवे, व्यासो अभिनवे, युग कल्पना नित ॥

× ×

कनक-कशिपु क क्रूरता सँ जखन युग-प्रह्लाद ताडित ।
तखन भवन क खंभ सँ प्रगटय दियौ नरसिंह नादित ॥
निगम मणि केँ लुटय आबय देखु, कट्ठ कनकाक्ष क्रूरे ।
महामीन क अवतरण हित मनु क मन करबे अधीरे ॥

यदि च दितिज क दुराग्रह डुबबय चहय बसुधा क धूजा ।
की न उचित महावराह क विकट दन्तावलि क पूजा ?

सिन्धु मन्थन हित यदि च सुर-असुर संहति सर्जना हो ।
शेष रज्जु क योजना हित कमठ पीठ क अर्चना हो ॥

दानदर्पी बली बलि, पुनि वामनी संवर्धना हो ।
अमृत छीनय सुरासेवी, मोहिनी क प्रवर्तना हो ॥

यदि च मिझबय सहस-भुज जमदग्नि-अग्नि बहाय झंझा ।
प्रखर परशु थम्हायबे शुभ की न राम क सुदृढ पंजा ?

यदि च पुनि भूदेव दुर्दम, शैव शक्ति क दुष्प्रयोगी ।
वध अवधि अवध क किशोर क पाणि धनु-बाण क प्रयोगी ॥

आइ मर्यादा - पुरुष लीला - वपुष अवतरण संगहि ।
आइ बुद्ध प्रबुद्ध कल्कि क कल्प संकल्पक प्रसंगहिँ ॥

पञ्चदेव क पाञ्चभौतिकता उपर देवत्व दुर्भर ।
आइ देवत्व क प्रतिष्ठा मानव क निष्ठा क ऊपर ॥

सूर शूर क रूप रूपित, गणपतिहु गण - तंत्र पूरक ।
पंच देवहु संचमंच रिपु - प्रपंच क मंच चूरक ॥

आइ गौरी बनथु श्यामा, शिव जखन शव बनल भूतल ।
योगमाया सजग जगथु, शेषशायी पुरुष सूतल ॥

ज्योति लिंग इरोत सून-मसान नहि जनपथहु चमकओ ।
स्फुरित शक्ति क पीठशक्ति क स्रोत जलथल सगर उमड़ओ ॥

रक्तबीज क रक्त अणु - परमाणु चाटयु क्रूर काली।
शारदा विज्ञान वैभव, अन्नपूर्णा शस्य - शाली॥
देवयानी कच - कलाप क आइ जादू कच उपर नहि।
साधना संजीवनी केर लगन लागल मनहिं जखनहि॥
आइ पार्थ क चित्तपट नहि खचित सुर बाला क छवि घन।
पाशुपत व्रत जखन संकल्पित न भय कल्पित छनहु मन॥

....

आइ पुनि सुर - असुर संग्राम क नवल इतिहास घटना।
सिन्धु मंथन हित विहित प्रतिनिधि करय नव सृष्टि रचना॥
पद्य - पद्म क संग गद्य - गदा क घूर्णित गति प्रखर हो।
शंख ध्वनि धुनि चक्र चंक्रम प्रेरणामय अभय वर हो॥

—:::—

पुरुषार्थ शिक्षण

प्रकृति कविता की प्रकृतिए यदि विकृतिएँ दूषिता हो !
सरस घन की रस बरसि यदि धरा सैकत शोषिता हो !
आत्म-रक्षा जीवन क थिक प्रथम दीक्षा, तदनु शिक्षा !
हाथ भिक्षापात्र, माथ न अर्थशास्त्रक सत्समीक्षा !!

ब्रह्म - सूत्र क भामती वा
नाट्य - सूत्र क भारती ।
काम - सूत्र क वृत्ति व्यर्थे,
यदि न अर्थ क सारथी ॥

× × × ×

कौना नन्द क कुसुम - नगरी कौमुदी उत्सव निमग्ना !
अखन पश्चिम - वायवी सीमान्त रेखा छिन्न - भिन्ना !

आइ तक्षशिला क विद्या - चत्वर क एकान्त कुंजे
ककर मुक्त शिखा शिखर प्रज्वलित बाधा तृण क पुंजे ?
मगध दगधल, जकर क्रोधानल क इंधन नंद-वंशे !
चन्द्रगुप्त क रश्मि - रेखा यवन - कमल क कयल ध्वंसे
आइ चनका डीह पर के पाठशाला सजा रहले ?
पाठ हित पुरुषार्थ शास्त्र क शस्त्र संगहिँ पिजा रहले !
धर्म मोक्ष क प्रथम अंतिम बिन्दु मिलते मध्य रेखा
अर्थ बिनु पद प्रथम चरमहु व्यर्थ पुरुषार्थ क लेखा—

शास्त्र सूत्रेँ गथा रहले,
मंत्र यन्त्रेँ जगा रहले,
शस्त्र शास्त्रेँ मजा रहले,
शास्त्र शस्त्रेँ सजा रहले,
शिखा शाखा मुक्त के पुनि
शिष्य - मंडल बजा रहले ?

तनिक अन्तेवासिनी भए,
चन्द्रिका प्रियदर्शिनी भए,
जुटब राष्ट्र क रक्षिणी,
रिपु-भक्षिणी विष-अर्पिणी भए,
हँसब देश क दस्यु - गणकेँ
कुटिल कृष्णा सर्पिणी भए !

कुटिल कटुपथ नीति-रथ चढ़ि स्वाभिमान सदर्थ करवे ।
विष क विष औषध विषम, सम शमन सम, अन्वर्थ करवे ॥

राक्षसहु रक्षक बनत, गुप्तहु प्रकट चन्द्र क कला पुनि ।
विष प्रयोगहु अमृत परिणत, बंधनो मुक्ताफला गुनि ॥

चेतना चि. देत, अंत दुरंत गृह - कलहु क तदन्ते ।
बंद भौतिक द्वंद्व, देशक शेष - सीमा प्रकृतिवंते ॥

पुरुष - सूक्त उदात्त स्वर कथ पाठ पढ़ु बढ़ु लेत दीक्षा ।
शस्त्र - रक्षित राष्ट्र पौरुष फलित करते शास्त्र - शिक्षा ॥

—::—

कला-बोध

आइ पुनि की सुना रहलहुँ अश्वघोष क ललित भाषा !
शोक हरवा लय अशोक क चक्र चालित पथ विभाषा !!
आइ की पुनि नचा रहलहुँ रचा रति-रुचि कला-मंचे !
गृह - तपोवन नन्दिनी कें वंदिनी पुर - पथ प्रपंचे !!
मेनका क सुता न ई थिक, कण्व-पालित प्रकृति-कन्या ।
हंत ! दुष्यन्तहि क दोषें घुमा रहलहुँ अन्यमन्या !!
देखा रहलहुँ की अलोला गुफा प्रतिमा छवि अनन्या ?
अजन्ता क कलामुखी किन्नर - सखी रूचि रूप-धन्या ॥
विरह - दग्ध विदग्ध अलका—बालिका हित मेघ दूते ।
पठा रहलहुँ, चेतनो अवचेतनो, की बुझि सबूते !!

हंस भृंग चकोर दूत क वचन रुचिरो रुचि न जगत्रय ।
रघु कुमार क बान गुन धनु उपर कवि केँ कहू चढ़त्रय ॥
आइ नहि बिलमाउ माघ क मेघ बनि हरिकेँ पथक बिच ।
योजना शिशुपाल वध केर धर्मराज क अध्वर क बिच ॥
युद्ध नीति किरात अर्जुन रीति वेणी - संहरण हित ।
बीर चरित क उत्तरे भवभूति केर भूकाल सीमित ॥
उदयन क उदय क उदेशेँ लावनिक लावन्य घूमओ ।
पुनि युग क यौगन्धरायण संग रन-वन कला घूमओ ॥

... ...

हम न आइ समाधिभाषा सुनब, घुमब न मठ-विहारे ।
दर्शन क वन बीच मृगदल दलन पंचानन दहाड़े ॥
वचन केर पल्लवन वा सन्दर्भ - शुद्धि क चारु धारा ।
कान्त कोमल पदावलि अथवा गिरा शृंगार सारा ॥
कोमला प्राकृत वचन रचना, न वा अवहट्ट हाटे ।
भ्रमहु हम नहि भ्रमन करबे एखन प्रीति क रीति वाटे ॥
राज-भवन क उषा हित नहि चित्रलेखा चित्र अंकन ।
करओ तूली लय, गली दय, कला जन-जनपद क टंकन ॥
गृह-गृहिणि आङन न सीमित पारिजात क सुरभि रंजन ।
अपन परती भूमि पर नन्दन बसाबथु नन्द - नन्दन ॥
गीत-गोविन्द क प्रणय रण-प्रणव परिणत पुण्य गीता ।
व्रज क राधा-धव बनथु पुनि धनुष - यज्ञ क राम-सीता ॥

नहि नचारी पर नचायब शिव भवानी लास्य - लीला ।
तांडव क कटुताल भैरव - भैरवी केर काल - क्रीडा ॥

❀ ❀ ❀ ❀

आइ अइपन देव - उत्थान क लिखित हो देश - सीमा ।
कमल पुरइन पुरओ छवि-पट जय किसान जवान खीमा ॥
आइ फूल क माल पहिरथु गगन - नेता विज्ञ नव्ये ।
तिलक केसरिया लगाबथु समर - जेता भाल भव्ये ॥
आइ अभिनन्दन क चन्दन चढ़ओ अभिनेता न नेता ।
अन्तर क स्वर - तार गुंजओ सर्वभूतहितैक - चेता ॥
कर्म - पट्ट कर मे चुमायब दूभि अक्षत पान - फूलो ।
प्रगति - पट्ट पद कें नमायब माथ रेणु चढ़ाय चूलो ॥
घरण करते आइ कवि ! तनिके स्वमेव कला-कुमारी ।
रति .. रस लालस न [illegible]रुणा-कण [illegible]क, ओज-बलक भिखारी

—:::—

योजना

१

आइ पलखति नहि कनेको,
पल क छति नहि आइ करबे ।
स्व - हित निहिते विश्व - हित
चित भावनात्मक ऐक्य भरबे ॥

२

एखन रुकबे नहि कवे !
प्रतिभा प्रभावित भाव वाही ।
आइ उपजैबे उरस, नहि
भय क रौदी, लोभ दाही ॥

३

समय सम्हरि नजा रहल अछि,
रीति काल लजा रहल अछि !
कर्म - पथ रथ जा रहल अछि,
कवित प्रकृत सजा रहल अछि ॥

४

तखन घुरिअयबो उचित नहि,
घूरि जयबो नहि उदेसे ।
घुमब धुरियैले पदेँ,
मधु - कन चुनब देशे - प्रदेशे ॥

... ...

५

बोध बुद्ध क लेब ढंगेँ,
जिन – अहिंसा व्रत प्रसंगेँ ।
वैष्णवी संस्कार अंगेँ,
शैव दीक्षा शक्ति संगेँ ॥

६

सम्प्रदाय सहाय दशनामी
प्रणामी नहि उमंगेँ ।
गाम - गाम क देव - देवी
पुजब पुनि समयानुषंगे ॥

७

गुरु शिख क बानी कृपानी,
अहल्या - लच्मी क राखी ।
मानसी तुलसी क शुभ संकेत,
सूर कबीर साखी ॥

८

पद्मिनी केर रूप - दर्पण,
योगिनी मीरा क अर्पण ।
रक्त - तर्पण आत्म-बलिदानी क,
संत क सत् समर्पण ॥

९

माधव क साचिव्य शुचि,
यौगन्धरायण योजना लय ।
चंदवर संकेत, भूषण छुन्द,
पृथ्वि क प्रेरणा लय ॥

१०

पञ्चतन्त्र क नीति - रस,
चाण्डेश्वर क स्वर सन्धि - विग्रह ।
चतरि अक्खर - खांभ विद्या-
पति क कीर्तिलता क संग्रह ॥

११

दछिन दिग् - बाही पवन,
पुलकेशि पुलकित कीर्ति राका ।
खारबेलहु चार - बारिधि,
पार कय, उत्कल - पताका ॥

१२

अनल प्रज्वल चोल - नृपकुल—
चूल अरिदल तूल भस्मे ।
पाण्ड्यहु क पाण्डित्य रण-ताण्डव
अरि क पुर रीति रस्मे ॥

१३

पुरुषपुर प्रख्यात पेशावर,
जकर यश नाम अंकित ।
जीति रण रणजीत पुनि निज,
कीर्ति गिरिगुरु श्रृंग लंघित ॥

१४

शाह पृथ्वी नय क पालक,
गिरि विश्रृंखल श्रृंखला कसि ।
सभ महान समान मान्ये,
दच्छिणोत्तर कुन्तला बसि ॥

१५

विशद वृत्त अतीत पट,
चित्रित विचित्र अनूप रूपे।
कय रहस्य छी योजना,
निर्मित करब नव यश - स्तूपे ॥

१६

कोकिल क जय भैरवी,
बंकिम क वन्दे मातरम्।
रवि क उच्छल जलधि,
कवि जप - मन्त्र मधुरं भारतम् ॥

१७

समिधि सविधि जुटाय आ-हिम -
सेतु होम क वेदिका।
यज्ञ सारस्वत महा-
भारत क राजस - सात्त्विका ॥

× × ×

१८

आइ फहरयबै पताका,
कीर्ति राका दिग् - दिगन्तेँ।
आइ झहरयबै सुधा रस,
मरु - धरा उर्वर अनन्ते ॥

१९

आइ लहरयबै लहरि दुग्धो-
दधि क सर - सरि प्रबंधे ।
शक्ति शान्ति क रक्त क्रान्ति क,
भ्रान्ति ने रहतै निबन्धे ॥

२०

सेतु सँ हिम - केतु धरि,
पुरबी पुरी सँ द्वारका धरि ।
एकमेव परत्व - स्वत्व क,
तत्त्व उमड़ओ लहरि सबतरि ॥

२१

अग्निवर्णा स्वर्ण गैरिक,
विजय - हेतुक केतु फहरओ ।
विन्ध्य बन्धन, हिमक लंघन,
सिन्धु मन्थन करय ने केओ ॥

—:※:—

रश्मि-रेखा

१

आइ अणु परमाणु जाग्रत्,
जड़ जगत जीवंत जंगम ।
विगत निश नैराश्य, आशा -
उषा विहुँसलि क्षितिज संगम ॥

२

कर्म रत युग - धर्म चिन्मय,
रचि रुचिर रचना क मुद्रा ।
आइ कवि! जगत्रय दियऽ जग-
दृग जड़ित जड़ता क निद्रा ॥

३

मेटयतै कालुष्य पर - वशता,
विवशता तिमिर - लेखा ।
गढ़ल जयतै नवोदित
इतिहास सूर्य क रश्मि रेखा ॥

४

आब नहि क्यौ आक्रमण कय,
सिन्धु सिकता पार करते ।
आब नहि क्यौ विश्व - जेता,
कोनहु कोनहु चापि धरते ॥

५

आब जुटि अयते न शक दल,
हून नहि पुनि हूलि सकते ।
आब नहि लुंटाक दल,
गिरि सिन्धु नद पथ बूलि सकते ॥

६

नाथ बनत अनाथ नहि,
ने क्षमा मूर्ति क नयन भंजन ।
आब सिकता-दस्यु सिन्धुसुताक,
करत न हरन - गंजन ॥

७

नहि चचयबा लय सतीत्व,
चिताग्नि सजते क्षत्रियाणी ।
स्वजन मर्दन हित न,
दोसर सँ लुटौतै राजधानी ॥

८

आइ चंगेजी न, रंगेजी न,
अंग्रेजी क चंक्रम ।
सजग अंग्रेजल बखन,
विक्रम पराक्रम स्वमत संगम ॥

९

विक्रमे सँ रत्न नव,
आदित्य सँ लालित्य नव रस ।
आइ लोकालोक संवत्,
बलित जन साहित्य हितवश ॥

१०

स्वर्ण निष्क कनिष्क चलबथु,
चलथु पार समुद्र गुप्तो ।
स्कन्द उठबथु स्कन्ध पर,
शासन क गौरव भार लुप्तो ॥

११

श्रमण आश्रम भिक्षुणी नहि,
राज्य - श्री केँ बनय देबै ।
हर्ष राष्ट्र प्रकर्ष हित,
पुनि बाण वाणी केँ पुजयबै ॥

× × ×

शीत भीत-हु, ग्रीष्म भीष्म-हु
सुखद मलयानिल वसन्ते ।
मध्य कतबहु वध्य रहते,
चिर अमरता आदि अन्ते ॥

—:※:—

पूजन - आयोजन

आइ पूजन योजना अछि मातृका गृह वसो धारा।
भव्य भाव क गव्य हवि दूर्वाक्षतो अक्षर उदारा॥

१

कामरूप क मुखर ज्वाला,
अमरनाथ क हिम शिवाला।
जगन्नाथ क पुरी पूर्वा,
द्वारका पश्चिम अपूर्वा॥

२

शृंगवेर सुमेरु शंकर,
विट्ठलेश्वर वेंकटेश्वर।
सेतु बंध क वृषभ - केतु क,
स्नपन गंगा जल सहेतुक॥

३

कांचनी कांची क प्रतिमा,
आलवाड़ क भक्ति महिमा ।
शक्ति शिव विष्णु क परत्वक,
तमिल केरल आन्ध्र गरिमा ॥

४

द्रविड रचित दक्षिणी तट,
बिन्दु - सर कन्या - कुमारी ।
नर्मदा गोदावरी जल,
महाकाल क उपर ढारी ॥

५

मलय चंदन शीतला अनु-
लेपनी पशुपति क अंगे ।
सुरभि कस्तूरी क तरला,
पुरी प्रतिमाऽर्चन प्रसंगे ॥

६

स्नान - मन्त्र क वर्ण - वर्णे,
बिन्ध्य हिम मलयाद्रि झरने ।
गंग - यमुनी कृष्ण - कवरी,
सिन्धु गोदावरी शबरी ॥

७

कौशिकी - गंडकी धारा,
ब्रह्मपुत्रो जल उदारा ।
देश मंडल कमंडलु मे,
अँटल ग्रहगन ख-मंडल मे ॥

८

करब पूजित रेणु कन - कन,
अन्न - पूर्णा बाँसि आङन ।
हुरत दुर्वह दरिद्रा केर,
क्षुधा क्षोभ अभाव आब न ॥

—::*::—

ज्ञान-विज्ञान

१

आइ नखत न गगन गुनबे;
सदा - नीरा नहरि खुनबे ।
अभय हृदय क संग भुजबल,
युक्ति शक्ति क अश्व हँकबे ॥

२

रथ क गति अथ प्रगति पथपर,
चलत दूर न मंजु मंजिल ।
गति - प्रगति रोधी - विरोधी,
नहि पुरान कुरान अंजिल ॥

३

ज्ञान नहि विज्ञान शोधी ,
नव्य नहि भव्य क विरोधी ।
कल्पना वास्तव न दूरे ,
योग योग्य प्रयोग पूरे ॥

× × × ×

एक धरती, भुजा युग्मे ,
त्रिगुण वृत्त त्रिकोण तिग्मे ।
धाम चारू, पंच नद जल ,
शास्त्र षट् रस, पुरी सप्तक ॥
अष्ट - छापी अष्ट - गंध क ,
रत्न नव नव,दिश-विदिश दश।
रुद्र एकादशो, द्वादश लिंग ,
ज्योतिर्मय दिगन्ते ॥
शक्ति पीठहु मठहु मंदिर ,
तीर्थ कुंड न आदि - अंते ॥

※

स्तूप चैत्य विहार परिखा ,
लक्ष्मश्री कतहु न रेख सरिखा ॥
पथ - विपथ महजिद मजार ,
हजार तर्ज क गली गड़खा ॥

बुर्ज गिर्जहु अपन तर्जहु ,
पढ़ओ शर्मन करओ शिजदा ।
जिद न कनियहुँ सत्र अमनिजे ,
स्तवन सबहुक अपन ध्वनिएँ ॥

... ...

पंथ शत गंतव्य एके ,
मंत्र कत मंतव्य एके ॥
कतहु कनहु न रोक - छेके ,
धरथु पथ पद अपन टेके ॥

*

किन्तु रुचि-संस्कार नाम-प्रकार
मत अधिकार समतहु ।
अपन माटिक गंध पानिक ,
रस किऐ पुनि अमत समतहुँ ?

*

कवि नवल संयोजना ई ,
प्रेरणा पावन पुरातन ।
सूर्य चन्द्र समान सत्यो
नव पुरान न, सत सनातन ॥

× × × ×

आइ इंधन रंधनी नहि ,
केवला काठी - फराठी ।

तरल अतल पताल स्नेहक
स्रोत स्रुति सँ अपन माटी ।।

*

स्रवित लहु लहु, द्रवित लोहहु
खनि खनि क मनि-मनिक सजने।
देश - कोशक कोष भरते
अपन साधन शक्ति जनने ।।

*

अग्नि वज्र गलौत, विद्युत्
कें बजौते छहरि निर्झर ।
लौह-वृष शिव-वृषभ संगहिँ
चरहु चाँचर करत उर्वर ।।

*

प्रबल प्रज्वल लौह गलि-गुलि
तीव्रतम तरुआरि बनतै ।।
ताम्रपर्णी स्वर्णपत्री स्व-रस
वश संस्कार तनतै ।।

*

खंड खंडहु शक्ति-पुंज प्रमाण
अणु - परमाणु बनतै ।।
'अणोरणीयान् महतो महीयान्
मंत्र पुनि झंकार करतै ।।

लवण सँ लावण्य संगहि
तत्व सत्त्व अनेक झरतै ।
अम्ल पुनि रस धुर्य बनतै
द्रवण द्रव्यक रूप तनतै ।।

❋

पहुँचतै भू रश्मि - रेखा
खगोलो भूगोल बनतै ।
ग्रह उपग्रह धरि सघन घन
खेत ओ खरिहान छनतै ।।

❋

मनुजनु क कर्मण्यता सँ
सुरहु केँ लगतै सेहंता ।।
पुनि पुराण क वचन जँचते
नवयुगहु बिच सजि अहंता ।।

❋

ध्वनि चिरन्तन गगन मे
गुंजित निरन्तर तत्त्व रचने ।
देवताहु क सत्त्व तखने,
मनुजता केर स्वत्व जखने ।।

❋

ज्ञान बिनु विज्ञान पशुता ,
प्रकृति बिनु चैतन्य जड़ता ।

उभय संगत, अभय अभिमत ,
ज्ञान गुन विज्ञान समन्वा ॥

※

शस्त्र - शास्त्र क प्रेय - श्रेयक,
लोक - बेद क प्रति नवीने ।
ब्राह्म - क्षात्र क, स्वर्ण - लोहक,
श्री-श्रम क गति-विधि प्रवीणे ॥

※

पीठ पर धनु, दीठ पर मनु-
मन्त्र, कर कुश कर्म लीने ।
ज्ञान नहि विज्ञान बिनु,
नहि तंत्र साधन मंत्र हीने ॥

—::※::—

'जा रहल छी'

पर्व गंगा सिंधु संगम, लग्न संक्रमण क अनूपम ।
अंग - अंग उमंग पुण्य प्रसंग काल तरंग चंक्रम ॥
कविक कविता गिरिक सरिता सिन्धु बिन्दु सजा रहल छी ।
जलधि उच्छल छहरि-नहरि नहा रहल छी, जा रहल छी ॥

पार्थ छथि ठकुऐले ठाढ़े,
कुरु - क्षेत्र क व्यूह गाढ़े ।
सारथी क मुखेँ समुख—
गीता सुनाबय जा रहल छी ॥१

सिन्धु - तट पर दर्भ आसन,
बैसि रघुपति करथि अनशन ।
दमन हित उठबथु शरासन—
से सुझाबय जा रहल छी ॥२

मान व्यक्तित्व क बचत नहि,
जा' न राष्ट्र क मान जाग्रत ।
तथ्य ई पुनि मामसिंहहु कें—
जनावयें जा रहल छी ॥३

हल्दिघाटि क शिला तापी,
क्षुधित क्यों उद्भट प्रतापी ।
संग भामा - चेतक क,
रस रसद पठवय जा रहल छी ॥४

जौहरी चित्तौर एखनहुँ,
स्वर्ण वर्ण क शुद्धि रखनहुँ ।
बनि निकष पाषान कनकन,
कनक कसवय जा रहल छी ॥५

सोमनाथ क घड़ी - घंटा,
विश्वनाथ क बड़द बंठा ।
लटपटैल भरमैल तकरा,
पानि चढ़बय जा रहल छी ॥६

विजय नगर क खंडहर कें,
दुर्ग दुर्गम बनयबा लय ।
बुक्क हरिहर संग विद्यारण्य,
बजबय जा रहल छी ॥७

शिव भवानी खड्ग धारा,
युग - अपूजित रक्त धारा ।
अपन बलिदानी असृग दय,
बीभ छोड़बय जा रहल छी ॥८

छथि प्रतापादित्य ग्रस्तै,
गुप्त चन्द्र कुमार अस्ते ।
विग्रही ग्रह राहु केतु क,
तिमिर चीरय जा रहल छी ॥६

बंधन क कटु श्रृंखला कें,
धुरय थिर जीवन गला कय ।
क्रान्ति बीर क मुखबिरक,
बढ़ि खबरि लेबय जा रहल छी ॥१०

कते एखनहु मीर जाफर,
सफरमैना चंद नानक ।
सिंह जय क श्रृगाल दलहु क,
गाल गलबय जा रहल छी ॥११

ढुकि घरहु वा आङनहु गहि,
जे फुकय घर आततायी ।
गृह - कलह अनल क लपट,
दुःसह - उठाबय प्रत्यवायी ॥

द्वेष - द्वंद्वी लोभ फंदी,
मंदमति पर प्रत्ययी जे—
तकर भंडाफोड़ करबा लय,
समाज सजा रहल छी ॥१२

भयक थरथर, लोभ जर्जर,
काम कलकल, दाम दलमल ।
मल समाजक पथ-पतित कें,
सुपथ चलबय जा रहल छी ॥१३

श्रमिक श्रम सँ मिलक सपना,
कृषिक कण सँ कनक कलना ।
पुंज लुंजिउ कय प्रपंची,
भुलय पुंजीपतिक पलना ।
तनिक बंकक बहुल अंकावलि
मेटाबय जा रहल छी ॥१४

जे विपन्नक अन्नपूर्णा,
छिनय ऋण-कण कीर्ण जाले ।
जन विपति सँ वितत संपति;
अरजि भू - धन गरजि काले ।
तनिक पंक कलंक कें,
निर्मम धोखारय जा रहल छी ॥१५

बुद्धि रहितहुँ जे अबुद्धे,
शुद्धि रहितहुँ जे अशुद्धे ।
जन समाज क लाज बेचथि,
घूस फूसि बजार लुब्धे ॥
खोरि चोरिबजार घुसखोरी,
जराबय जा रहल छी ॥१६

... ...

आइ नहि कवि ! रोध मानब,
छनहु नहि गति रोध आनब ।
युग क आहि बताहि कैलक,
तदनु ई अनुरोध जानब ॥
रमु, विलमु अघ-वध अवधि,
हम विजय बजबय जा रहल छी ॥

—::※::—

भरतवाक्यम्

राम सानुज शंकर क मधु माधवी पद पल्लवा ।
देथु नित्यानन्द प्रेम प्रतीति श्रीधर वल्लभा ॥
राम कृष्ण समर्पिता मति गति विवेक निवेदिता ।
राम मोहन तीर्थ सदयानंद युग संबोधिता ॥
झलक प्राची तिलक रवि अरविन्द-बन्धु दिगंगना ।
चन्द्र बंकिम बला वन्दे मातृभूमि क नन्दना ॥
मद न मोह न दास कर्म क केस वेस न कल्पना ।
लाज राष्ट्र क लाल वल्लभ नेह रूप क अल्पना ॥
देश भगत क रकत चानन सँ सुवासित भारते ।
भवतु भव्य भवाय विश्वहिताय नित्य नमोस्तु ते ॥



Scanned by CamScanner

"ओंकारश्चाथशब्दश्च द्वावेतौ ब्रह्मणः पुरा ।
कण्ठं भित्वा वहिर्यातौ तस्मान्माङ्गलिकावुभौ ॥"

एहि रुपें मनुक कहब छनि जे चतुर्मुख ब्रह्मा (शब्दब्रह्म)क कंठसँ पहिल ध्वनि 'ओं' ओ प्रारंभिक शब्द 'अथ' उच्चरित भेल । चतुर्मुखी वाणीक विश्लेषण करैत शब्दशास्त्री लोकनि पुनः परा, पश्यन्ती, मध्यमा ओ वैखरीक चारि रूप निरूपित कयलनि । ताहिमे परा-पश्यन्ती सँ मन्त्रद्रष्टा ऋषिमात्रके गोचर होइछ, मध्यमा क्रान्तदर्शी कविके ओ वैखरी जनसाधारणके उपलब्ध रहैछ । 'अन्तर्नाद' कोनो ऋषि-कविक नहि, प्रत्युत देश-कालक परिणामी साधारणी वाणी थिक जे कदाच भावुकक अन्तर-तारकें अनुनादित कऽ सकय ।

★

अन्तर्नाद : एक दृष्टि

मुक्तक काव्य-भेद । १५ विभिन्न शीर्षक मात्रिक छन्दमे गुम्फित । राष्ट्रियता-सूत्रमे ग्रथित । देशोन्नयनक भावसँ मुखरित । भारती-भूमिमे धर्म-संस्कृति-भाषा ओ क्षेत्रीयताक विविधता रहितहुं भारतीयताक आन्तरिक भावनासँ राष्ट्रिय अखण्डता ओ भावनात्मक एकताके निनादित करैत अन्वर्थ अछि ।

देशानुराग भाव-विशेष मानल गेल अछि, अथापि राष्ट्रोन्नयनक हेतु उत्साहक स्थायी भाव विभिन्न संचारी भावसँ पोषित अछि । मुक्तकमे कथानक अप्रयोजनीय । अथापि कवि-कविताक संवाद संयोजनसँ रसात्मकता उद्‌बुद्ध होइछ । देशाभिमानी नागरिक मात्रक आन्तरिक स्वर एहिमे अनुनादित अछि । 'अन्तर्नाद' नामक अनुसारे आन्तरिक भावनाके स्वर दैछ । विकारी अनुभावक बाह्य विस्फोट नहि, अपितु संस्कारी भावक आन्तरिक स्फोट अभिव्यक्त करय चाहैछ । भ्रान्ति-रहित क्रान्तिके, विश्वशान्ति-सहित राष्ट्रिय कान्तिके उद्दीपित राखय चाहैछ । ज्ञान-विज्ञानमे सामंजस्य, पुरातन-नूतनमे समन्वय, ओ देश-स्वदेशक एकात्मताके विश्व मानवतामे उपयोग देखय चाहैछ । स्वाधीनतोत्तर राष्ट्रजीवनमे जे प्राणोल्लास ओकर विकास-यात्रामे प्रेरणा दऽ रहल अछि तकरा प्रतिध्वनित करय चाहैछ । अन्तर्नादक लक्ष्य आजुक परिवेशमे एहि सभ पंक्तिमे सावेश लक्षित अछि ।

★

परिशिष्ट

विशिष्ट भाव ओ शब्दार्थ

१. 'जयघोष'— ककर ? चिरन्तन भारत राष्ट्रक— जकरा हम सब 'स्वर्गादपि गरीयसी' कहि पूजैत छी। ई भूमि अन्नपूर्णा सहजहिँ, खनिज धातु-मणिसँ लक्ष्मी ओ वेदवाणीसँ सरस्वती सेहो। चारि प्रकारक नायक जकाँ शान्त ललित उदात्त उद्धत एकर धरातल—हिमाचलक सन शान्त प्रदेश, कश्मीरक ललित मनोरम भूमि, विन्ध्य दक्षिणक उद्धत-उन्नत स्थल ओ उत्तरक उदात्त मैदान। एवं ई नायिका भूमि पद्मवनसुरभित पद्मिनी, वन-गिरि-नदी-सिकतामयी चित्रिणी, समुद्री शंख-मुक्ताशुक्तिक धारणें शंखिनी ओ जंगली हस्तीक मस्तीसँ हस्तिनी–सब रंगरूपक नायिका। तहिना सर्ववर्णमयी : नेपाल-भूटानक पीतकान्ति, काश्मीर-पंजाबक रक्ताभा, दक्षिणक श्यामलकोमला ओ मध्यक गोधूमी सितासिता। पुनः भाषा-उपभाषामे द्रविडक द्रुतपदा, वन्य स्वरप्रधाना कोलकुलक बोली ओ उत्तरी स्वरव्यंजनपूर्ण आर्यभाषा। वयोवृद्धा ज्ञानसिद्धा महिमामंडित भूमि ई थिके— कतबहु मेटबओ, दूबि-धान जकाँ उपजले, अतएव पुनर्नवा सहजहि। उच्चतामे सर्वोन्नत गौरीशंकर-एवरेस्ट, गम्भीरतामे अथाह सागर, स्वच्छतामे मानससर वा प्रवाहमयी गंगा। एहन हिमनिबन्धिनि, सेतुबन्धिनि ओ सिन्धुसन्धिनि भारतीभूमिकेँ सन्तति सभ किएक ने आरती उतारथि ? वन्देमातरम केर मन्त्र जपथि ओ जयहिन्दक जयघोष करथि ?

भुक्ति-मुक्ति–भोग-मोक्ष, श्री-ह्री– प्रेय-श्रेयप्रदायिनी लक्ष्मी एवं सरस्वतीक बीज मन्त्र। गिरिजा–पार्वती; पर्वतसँ बनलि। सिन्धुजा–लक्ष्मी, समुद्री सम्पदा सँ भरलि-पुरलि। वेदजा– वेदवाणीसँ जुड़लि। अर्थात् त्रिशक्ति स्वरूपा। भव-विभव–सांसारिक सम्पदा। मानस – मन ओ मानस सरोवर, सप्तपुरी— पुराण प्रसिद्ध 'अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका, पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।' मेदुर- मांसल, सघन। कुसुमाकर-वसन्त।

(२)

महातत्त्व :— कविता कविसँ कहैछ जे 'शरदचंद पवन मंद' रास-लीलाक रस-प्रपंचमे हम एखन अहाँक संग नहि पूरब। ब्रजबालाक संग मान-

विरहक केलिकलामे किलोल मचयबा' लेले हम कोनो सहयोग नहि देब। हस्तिनापुर-इन्द्रप्रस्थक दुर्गत दृश्यकें दूर करबा लय द्वारकाक गृहरसी रणछोड़ कृष्णकें कुरुक्षेत्रमे रथक रासि पकड़बाक छनि। एहि महातथ्यकें बुझि व्यास भागवतक क्रीडा-कीर्तन नहि कय, महाभारतक गीतागायकक रण-गाथा रचथु, जकरा गणपति अंकित करथु। (ज्ञातव्य जे व्यास वाणीकें लिपिबद्ध करबा लेल गणपतिकें प्रस्तुत कयने छला।) एहि प्रसंगसँ महान् भारतक रचनामे साहित्यिकक योग, गणतन्त्रक गणनायकक सदुयोग, इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली) क ऐतिहासिक प्रयोग किछु विशेष प्रसंगकें व्यंजित करैछ। वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे एकवसना लज्जालुण्ठिता कृष्णा द्रौपदीक केश-अंचल लुण्चित करबाक घटना किछु सामयिक व्यसनकें ध्वनित करैछ। एहि महातथ्यकें कविता मुखें प्रस्तुत कयल गेल अछि।

पुलिन—तट, हस्तिनापुर—कौरवक राजधानी, वर्तमान मेरठ लग। इन्द्रप्रस्थ — पांडवक राजधानी, वर्तमान दिल्लीक प्राचीन नाम। कृष्णा-द्रौपदी। रणछोड़—जरासंधक आक्रमण कारणें मथुरा छोड़ि द्वारका बसला पर कृष्णक नाम प्रसिद्ध, पार्थसारथि—अर्जुनक सारथ्य कयनिहार कृष्ण।

(३)

रण-रस — पूर्वोदित तथ्यक क्रममे कविता हठ पर अछि जे ई अवसर वेणु-वीणाक झंकारमे स्वर मिलयबाक नहि। जखन विधुरा क्रौंचीक स्वर आदिकविक कंठकें आकुल-व्याकुल कयलक तखन हुनक शोक तेहन आक्रोशक श्लोक — 'मा निषाद' कहलक जे रामायणक रण-रसकें जगा गेल। मैथिली-हरणक बदलामे रावणकें मरण वरण करय पड़लैक। दशानन ब्रह्मकुलक आभिजात्य रखनहु, शैव-दलक शिक्षा-दीक्षा पौनहु, शक्तिक दुरुपयोगी भेल तँ ओकरा विनाश हेतु दक्षिणक अगस्त्य ओ उत्तरक विश्वामित्रकें मिलाय मध्यस्थ बाल्मीकिकें रामायणक योजना करय पड़लनि। तथा उत्तरकालहुमे एहि व्यथाकथाकें लव-कुशक गरमे सजगतासँ सजबय पड़लनि। कविता तत्कालीन देशदशा पर ओह्नी रण-रसकें गयबाक उपक्रम करय—शस्त्र-शास्त्रकें, अनल-आहुति ओ रण-आहूतिकें संग-संग संयोजित करय से उचित-स्वाभाविक।

क्रौंची—मादा पक्षी विशेष, तमसाक तटपर जकर स्वामी व्याधक वाणसँ मुइल। प्रणय—प्रेम, पण—प्रतिज्ञाक आधार, बाजी। परिणय—विवाह।

विषुव रेखा—सूर्य संक्रमणक खगोलीय सीमारेखा छद्मवेषा कपटवेषधारी आहुति-अग्निमे—हवि चढ़ायब, आहूति—आह्वान, युगपद—एक संग, अंचिता—पूजिता।

(४)

नव पुराण: नव इतिहास:— पुराण पुरने होइछ, इतिहास पूर्ववृत्त होइछ किन्तु ओकर ढरनि-गढ़नि आब युगधर्मी नवता परिवेशक हो। एहि ले' जे कोनो व्यास-वाल्मीकि आवथि वा सूत-शौनक होथि—कथाक अवतरणमे हिरण्यकशिपुक क्रूरता, प्रह्लादक निष्ठा दूहूक संघर्षमे नरसिंहक प्रादुर्भाव बुझवथि। दानदर्पी वलिक छलना ओ मत्स्य कूर्म वराहक अवतार—कल्पनाक नैरन्तर्य देखावथि। देवता कोना मानवताक उपास्य होइछ से विघ्नहारी मंगलकारी गणपति, तिमिरहारी सूर्य ओ शक्ति-सम्पदा-विवेकक अधिष्ठात्री शक्ति ओ लोकमंगलक ले' विषपायी शिव एवं व्यापक ओ पालक विष्णुक तत्त्व-महत्त्वकें युग कल्पनाक योग्य योजित करथि। जाहिसँ ने पुराना वस्त्रमे लेपटाथि ने नग्नवसना भऽक बहराथि— कला-कविताक निखार तँ हो; किन्तु विकार नहि।

कनककशिपु—प्रह्लादक पिता हिरण्यकश्यप, एवं सोनक तकियावाला। नरसिं—दशावतारमे चारिम, एवं सिंहसमान पराक्रमी पुरुष। निगम—वेद, कनकाक्ष-हिरण्याक्ष असुर एवं जकर दृष्टि सोने पर छैक। दितिज—दैत्य, शेषरज्जु—शेषनाग समुद्रमंथनमे रस्सा बनला। सहस्रभुज—हजार बाँहिबाला सहस्राजुर्न, परशुरामक पिता जमदग्निक हंता। मर्यादापुरुष राम ओ लीला-वतार कृष्ण। सूर-सूर्य, सुरबाला-देवांगना उर्वशी।

(५)

पुरुषार्थ-शिक्षा— पुरुषार्थ तँ धर्म अर्थ काम मोक्ष सब थिक, किन्तु ई चारू जीवनक लक्ष्य जाहि अर्थ साधनसँ प्राप्त होइछ लोक तकरे 'असल पुरुषार्थ' मानैछ। किछु करबाक ललक चाही, अर्थ-साधनक सामर्थ्य चाही। तकर शिक्षणक हेतु ब्रह्मसूत्रक भामती, नाट्यसूत्रक भारती कामसूत्रक वृत्ति-व्याख्या पढ़बासँ पहिने आवश्यक जे पुरुषार्थ शिक्षा लेल जाय। आचार्य अहाँ कें भेटता तक्षशिलाक एकान्त कुञ्जसँ फिरल, शिक्षा सोसने, शासन सुधारक संकल्प नेने गुनगुना रहल छथि, श्लोक पुना रहल छथि — 'कस्तेन रचिते

राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्तते'— विद्यापतिओ एही पाठकें दोहरबैत पुरुषपरीक्षा दैने छथि। ओ शिक्षक थिका मौर्य आचार्य चाणक्य। सुनै छी हुनक निवास 'चनकाडीह' मिथिलामे कतहु परतीपरांत बनल अछि, हुनक आवास 'बैंकटपुर' (बैकुण्ठपुर) कतहु गंगापार विकट स्थितिमे कुण्ठाग्रस्त निरस्त पड़ल अछि। पुरुषार्थ शिक्षा ग्रहण करू— अपन इतिहासक गरिमा जगाउ। तखनहि— 'राक्षसहु रक्षक बनत, गुप्तहु प्रकट चन्द्रक कला पुनि। विष प्रयोगहु अमृत परिणत, बन्धनो मुक्ताफला गुनि॥'

भामती—वाचस्पतिकृत शांकरभाष्यक टीका। भारती—नाट्यशास्त्रपर अभिनवगुप्तक टीका। कामसूत्र—वात्स्यायन रचित कामशास्त्र। कुसुम-नगरी—पाटलिपुत्रक नामान्तर। कौमुदी उत्सव—नन्द-मौर्यक युगमे पाटलि-पुत्रमे प्रचलित शारदी पूर्णिमाक महोत्सव। अन्तेवासिनी—आवासीय शिष्या। 'विषस्य विषमौषधम्,— 'समः समं शमयति' चिकित्साक सिद्धान्त विशेष। राक्षस-विषकन्या-कूट प्रयोग मुद्राराक्षस नाटकमे स्पष्ट। पुरुषसूक्त—सहस्र-शीर्षादि षोडश ऋचा एवं पुरुषार्थवाणी।

(६)

कला-बोध— कलाक बोध सार्थक तखनहि जखन 'आत्मनः कलाम्' केर अभिज्ञा दर्शन करी। से केवल अश्वघोषक भाषा पढ़ने, अजन्ता-अलोड़ा गुफा देखने अथवा कण्वकन्या शकुन्तला अथवा अलकाक यक्षिणीक विरह-व्यथा गुनने, दूतकाव्य पढ़ने नहि चलत। रघुवंशी राम ओ यदुवंशी कृष्ण द्वारा रावण ओ शिशुपालक वध निर्बाध कोना हो, तकरहु उद्बोध राखय पड़त। कलाक अनुरोध अछि जे कने चित्रलेखाकें उषाकुमारीक महलसँ उतरि जन-जनपदमे चित्रांकन करय दी। आङनमे भामा पारिजात नहि लगवथु—परती-परांतमे पारिजात-कल्पतरुक पाँती रोपय-रोपबय दिऔनु। पुरीमन्दिरहिक परिसरमे गीतगोविन्दक तान नहि लगओ—देशक कोन-कोनमे नव-नव जयदेव गान करथु। गौरीक नचारीक लास्यक संग महाकाल-महाकालीक ताण्डव नृत्य सेहो समर-सीमामे चलओ। सुकुमार पद्धतिक वचन-रचनाक संग ओज-बलक गर्जना सेहो होइत रहओ।

कलाबोधमे चर्चित व्यक्ति ओ कृति— बुद्धचरितकार अश्वघोष, शाकुन्तल रचयिता कालिदास ओ हुनक रघुवंश, कुमारसंभव। दूतकाव्य मेघदूतक

परम्परामे हंसदूत चकोरदूत भृंगदूत आदि प्रसिद्ध। शिशुपालवधक महाकवि माघ। भवभूतिक वीरचरित ओ उत्तरचरित। भासक प्रतिज्ञायौगन्धरायण एवं स्वप्नवासवदत्ता। सिद्धलोकनिक समाधिभाषा। जयदेवक कोमलकान्त पदावली। पारिजातहरण नाटक। प्राकृत ओ अवहट्ट रचना, अजन्ता-अलोड़ाक गुफाचित्र आदिक कलाबोध सीमा ओ आब किसान जवान विज्ञानवेत्ता ओ सर्वभूतहितैकचेता ज्ञानीक सीमा धरि विस्तृत हो।

(७)

७. योजनाः——युग योजनेक थिक। वार्षिक-पंचवार्षिक- कोनो समयावधि रहओ, विनु रोक-टोकक, विनु पलखतिक जारी रहओ। मुदा ध्यान एतबे जे खेत पथारक दाही-रौदी टा मेटायबे लक्ष्य नहि, भयक रौदी, ओ लोभक दाही सेहो हटयबाक थिक। एहि लेल मानव-संसाधनक शोध चाही। जाहि लेल बुद्धक बोध, जिन महावीरक अहिंसा, शंकरक ज्ञान, वैष्णवी संस्कार, सिख गुरुक बाणी ओ कृपाणी, यौगन्धरायण-माधवाचार्यक साचिव्य, चंडेश्वरक सान्धिविग्रहिकता, संगहि चोल-पाडय-खारवेलक सागर पार धरिक प्रभुत्व ओ रणजीत-पृथ्वीशाह क शौर्य चाही। एहि लेल जय-जय भैरविक स्वर, वन्देमातरम् केर मंत्र, रवीन्द्रक उच्छलजलधि-तरंगा गीतक गान चाही। तखनहि 'विन्ध्य बन्धन, हिमक लंघन, सिन्धु मंथन'क परकीय साहस असम्भव हेतैक ओ अपन त्रिवर्णी स्वर्णपताका दिग्-दिगंतमे फहरयतैक।

केन्द्रीय विचार—'स्वहित निहिते विश्वहित'— अपन हित ताहि प्रकारक हो जाहिमे विश्वोक हित होइक। बहुमत—अल्पमतक विचार नहि, विश्वक मतैक्य जाहिमे हो एहने नियम-कानून अपना-अपनी सभक हितसाधक भऽ सकैछ— जकरे सनातन धर्म - सत्य अहिंसादि कहल जाइछ। अतएव एहि 'योजना' शीर्षकमे निवृत्तिमार्गी बुद्ध-महावीर ओ भक्तिमार्गी दशनामी वैष्णव एवं तुलसी-मीरा सहित, प्रवृत्तिमार्गी माधवाचार्य, यौगन्धरायण, सिक्खगुरु एवं पृथ्वीराज चन्दवर भूषण पंचतंत्रकारविष्णुशर्मा चण्डेश्वर विद्यापति सभक प्रेरणा संकलित अछि। देश-विदेशमे पुरुषार्थ पताका फहरौनिहार उड़ीसा एवं दक्षिणक ऐतिहासिक खारवेल, पुलकेसी, चोल, पांड्य आदि प्रतापी राज्यकर्ता पद्मिनी-लक्ष्मी-अहल्या आदि ऐतिहासिक महिला ओ उत्तरक रणजीत पृथ्वीशाह प्रभृति ऐतिहासिक राजपुरुष चर्चित छथि। एहि सब प्रेरणासँ

विन्ध्यगिरिकें बान्हि, हिमालयकें लाँघि ओ समुद्रकें फानि, क्यौ आक्रमणी पुनः प्रवेश नहि कऽ सकय— एहने योजना अपेक्षित ।

(८)

रश्मि-रेखा— 'उषा बिहुँसलि क्षितिज संगम' तखनुक अनुरोध-बोधक संबोधन थिक सर्वथा 'रचनाक मुद्रा' जे—'आइ कवि ! जगबय दियऽ जग दृग जडित जडताक निद्रा ।' आँखि खोलि देखबाक थिक नवोदित इतिहास-रेखा। आब ने क्यौ ग्रीक विश्वजेता ग्रीवा उठा सकत, ने कोनो शक हूण हूलि सकत, ने क्षमाशील पृथ्वीराजक क्यौ आँखि फोड़ि सकत, ने कोनो रेगिस्तानी आक्रमणी सिन्धु-कन्याकें अपहरण कऽ सकत । सतीत्व बचयबा लेल कोनो क्षत्रियाणीकें जौहर चिता नहि सजबऽ पड़तनि । ने कोनो चंगेजी चढ़ाइ हैत, ने अवरंगेजी रंज कोनो उत्पात मचाओत, ने अंग्रेजी साम्राज्यवादक विस्तार होयत । आब अपन विक्रमसँ नव नव रत्न आलोकित हैत ओ कनिष्कक स्वर्णनिष्क, समुद्रगुप्त स्कन्दगुप्तक गौरव, हर्षवर्धनक राज्यश्री सब पूजित होयत । नव इतिहासक रश्मि-रेखाक यैह अभिलेख लिखबाक अछि ।

कालुष्य-मलिनता, परवशता- पराधीनता, रश्मि- किरण, सिकतादस्यु-रेगिस्तानी लूटेरादल । विक्रमादित्य, हुनक नवरत्न सभासद, स्वर्णमुद्रा चलौनिहार कनिष्क, समुद्रगुप्त- स्कन्दगुप्त प्रतापी ऐतिहासिक विजेता, हर्षवर्द्धन, हर्षचरितकार- बाणभट्ट । राज्यश्री- हर्षवर्द्धनक बहिनि, जे अपन पतिक मृत्यु शोकसँ बौद्धसन्यासिनी भेलि छली ।

(९)

१. पूजन-आयोजन—मातृकागृह पूजामे गव्य हवि ओ दूर्वाक्षतक उदार आधर—'योगक्षेमो नः कल्पताम्' तखनहि सफल होयत जखन देशक चारू दिशाक— उत्तर हिमशैल, पश्चिमक द्वारका, पूबक पुरी ओ दक्षिणक सेतुबंध सबकें संयोजित राखल जाय । जा धरि गंगोत्रीक जल सेतुबंधक उपर ढारल जायत, ओ देश मंडलक कमंडलुमे गंगा-यमुना, कृष्णा-कावेरी, सिन्धु-नर्मदा कौशिकी-गंडकी- ब्रह्मपुत्र सभक जल भरल जायत ता धरि पूजन-आयोजन अक्षुण्ण रहत, संकल्प सफल होयत । जें 'करब पूजित रेणु कन' तें 'क्षुधा-क्षोभ अभाव आब न ।'

मातृभूमिक पूजन आयोजनमें चारू दिशासँ वस्तु उपादानक संग्रह अपेक्षित। द्वारका जगन्नाथ ओ अमरनाथ सेतुबंधक चौक पुरैत, कृष्णा-कावेरी-गोदावरी नमदाक दक्षिणी ओ गंगा-यमुना कौशिकी आदिक उत्तरी धाराकें देशक कमंडलुमे भरैत, धरतीमाताक रेणुकणकें सिंचित करैत अन्नपूर्णाकें घर-आङनमे पुनः बौंसि आनबाक राष्ट्रिय प्रक्रिया जागी। वृषभकेतु – शिव, ख-मंडल,—आकाशमंडल, दुर्वह —वहनकरवामे कठिन।

(१०)

ज्ञान विज्ञान— चिन्तन ज्ञानक, ओ प्रयोग विज्ञानक आधार। ज्ञान विनु विज्ञान अंध, विज्ञान विनु ज्ञान पंगु। दुहूमे सामंज्यस्य आजुक युग-बोध थिक। भारतीय प्रकृति दुहूमे ताल-मेल करैत आयल। जहिआ कहिओ कोनहु एकक अवहेलना भेलैक, राष्ट्रक अस्मिता पर आघात भेलैक। अभय हृदयक संग भुजबलक जोरमे मोड़ नहि आबय, ई सतत आकांक्षित। ज्ञान कहिओ विज्ञानक रोधी नहि, भव्य कथमपि कदाचितो नव्यक विरोधी नहि। जे जते मठ मंदिर, तीर्थ-कुंड, पुरी-धाम, शक्तिपीठज्योतिर्लिंग अछि। स्तूप-चैत्य-विहार, मसजिद-मजार, गिर्जा—गुरुद्वारा अछि, सब अपना-अपनी सजल-धजल रहौ, विविधतामे एकता बुझबैत रहौ। विज्ञानक द्रवद्रव्य, अम्ल-लवणक संश्लेषण-विश्लेषणसँ पदार्थके ऊर्जामे परिणत करैत रहौ। तखनहि शस्त्र-शास्त्रक, लोक-वेदक कुशल रहतैक—'ज्ञान नहि विज्ञान विनु नहि तंत्र साधन मन्त्रहीने' सफल हेतैक।

सदानीरा बरोबरि जल भरल, शक्तिक अश्व– आधुनिक शब्दमे 'हॉर्सपावर'। मंजिल-गंतव्य स्थान, गन्तव्य– गतिक लक्ष्य, मन्तव्य– ध्येय, द्रवण—पदार्थक द्रवरूप, द्रव्य—ठोस रूप, लवण– क्षार, अम्ल-एसिड, (रासायनिक परिणामी द्रव-द्रव्य)। एक परती.. आदि पंक्तिमे भारतीय संस्कृतिक अंश-उपादान। शिववृषभ ओ लौहवृष—बड़द ओ ट्रेक्टर। पाताल स्नेह.. तेल गैस आदि। विद्युतकें बजौते छहरि .. हाइड्रो एलेक्ट्रिसिटी। खण्डहु शक्तिपुंज .. अणु स्फोट परमाणु भट्ठी आदिक वैज्ञानिक प्रयोग संकेत।

(११)

'जा रहल छी'— पलायनवादीक समदाबारी नहि, ई तँ अभियानीक यात्रा-संकल्प थिक। संक्रमण-कालक प्रसंग अछि, गंगा-सिन्धुक तरंगित संगम मे स्नान-पर्वमे कविक कविता सरिता जकाँ प्रवाहित होबय चाहैछ।

देखैछ जे सागर-तट पर रामायणी राघव अनशनक आसन पर बैसल, रास्ता माङि रहल छथि। हुनका याचना छोड़ि शरासन उठयबाक सुझाव देव वांछित अछि। तहिना कुरुक्षेत्रक मैदानमे ठकुऐल ठाढ़ अर्जुनकें गीता सुनायब आवश्यक। ऐतिहासिक कालमे मानसिंहकें व्यक्तित्वक नहि, राष्ट्रि-पताक मान बचयबाक तथ्य बुझबैत, हलदीघाटीक तपी प्रतापकें रस-रसद पहुँचबैत, जौहर व्रती चित्तौरक भस्मके, विजयानगर खंडहरकें, सोमनाथक घड़ी-घंटाकें, विश्वनाथक बड़द-बंठाकें, शिवजीक भवानी खड्गकें पुजैत-पानि चढ़बैत, चन्द्रगुप्त कुमारगुप्त प्रतापादित्य--तमाम ऐतिहासिक पुरुषक स्मरण करैत बढ़ैछ। पछिला-अगिला जे जते जयचन्द मीरजाफर सँ क्रान्तिवीरक विरुद्ध मुखबिर सबहुकें खबरि लैत, गृहविग्रही आततायीक भंडाफोड़ करैत, श्रमिकक श्रमक पूजीवर बंकक अंकावली बढ़ौनिहार, सूदखोर महाजन, घुसघोर कर्मचारी, चोरबजारीक व्यापारी ओ स्वार्थसाधी बुद्धिजीवी सभक शोध-प्रतिशोध करैत कविताक अभियान चलिते अछि--जा धरि असत् पर पर सतक विजय नहि होइछ ता धरि चलिते रहत।

पार्थ--पृथा-- कुन्तीक पुत्र अर्जुन। दर्भ--कुश। शरासन-- धनुष। चित्तौर-- सिसोदिया राजवंशक दुर्जय गढ़, जतय क्षत्राणी चितापर चढ़ि जौहर व्रत करथि। बुक्क-- हरिहर बुक्क सहोदर विद्यारण्य स्वामीक प्रेरणासँ विजयानगरम राज्यक स्थापना कयल। राणाप्रतापक संग भामाकशाह चेतक घोड़ाक नाम अमर। भवानीभक्त शिवाजीक खड्गक नाम भवानी। असृग्--शोणित। चन्द्रगुप्त, कुमारगुप्त, प्रतापादित्य आदि प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजपुरुष। परपक्षमे मिलल मानसिंह, मीरजाफर, नानकचंद आदि इतिहासमे बदनाम व्यक्ति। पर प्रत्ययी--शत्रुक विश्वासी। कनक कलना--सोना बटोरब। बंक अंकावली--बैंक बैलेन्स। वितत--विस्तृत। अघ-वध अवधि--जा धरि दुष्कर्म मेटा नहि दी।

(१२)

'बिस्पीक डीह':-- देशहित अभियानक क्रममे, स्वदेशक डीहक पूजन करैछ। विद्यापति मिथिलाक नवोत्थानक पुरोधा थिका; तनिक जन्म-स्थान बिस्पी, कर्मस्थान गजपुर, सिद्धिस्थान भवानीपुर ओ निर्वाण स्थल मौअब - बाजितपुरक धूलिकणकें माथ चढ़ायब उचिते। बिस्पीक साहि-

रियक तीर्थमे लोकगाथाक नायक—लोरिक सलहेस-दीनाभद्री आदिक सम्मानमे सर्वथा सार्थकताक फलश्रुति अछि—"आइ राजा रंक पंडित गृहथ श्रमिक समान मानिअ। जाति-पांतिक भेदभावहु उपर मैथिली गणित जानिअ।" से जानले पर संभव भेल अछि जे—"आइ रसिया विपिन बसिया बजा रहला मधुर बँसिया। व्याप्त मिथिला- पदावलि बरतनिया अमरिका रसिया।।"

अम्बर-मणि— गगन प्रकाशक सूर्य। राजघाट— दिल्ली स्थित यमुना तटपर गांधीजीक चिताभूमि। साखी-साक्षी, तृण-पर्ण- खढ़ पात, नीहारिका— आकाशगंगा (नेबुला जकर बिन्दु-बिन्दुसँ सौरमण्डली बनैत रहैछ। संबल— पाथेय, विभूति— भस्म तथा ऐश्वर्य, भूति— ऐश्वर्य सम्पदा।

(१३)

वलिवेदीक विभूति— वलिदान-दिवस पर जाहि सत्य—अहिंसाक पुजारी महात्माक वलिवेदीपर फूल चढ़वैत छी—-बापूक पदपर श्रद्धार्पण करैत छी— ओ भारतीय स्वाधीनताक इतिहासमे सूर्य चन्द्र नक्षत्र नहि, नीहारिका जकाँ ज्योति-पुंज बनल रहता— तनिक प्रेरणा-पुंजसँ राशि-राशि बलिदानी देशक विभूति बनि युग-युग आलोकित करैत रहथु से काम्य—-'वलिवेदीक विभूति भूति देशक बढ़बओ शुभ टेक।"

विश्वेश्वरी— विद्यापतिक विस्पीडीहपर स्थित कुलदेवता। गजरथपुर— देवसिंह-शिवसिंहक राजधानी, लहेरियासराय निकट देकुली (देवकुली) के ओकर अवशेष कहल जाइछ। उग्रनाथ (भवानीपुर) कविक सिद्धिस्थान। चौमथ वायातट— कविक गंगालाभ निर्वाणस्थान, वनानी—पैघ वन (अरण्यानीक व्युत्पत्तिपर)। जाबि सकते—जाबी लगाय मुह बन्द करब।

(१४)

भूमा निष्ठावंत—-देवदानवक संघर्ष, प्रकृति-विकृतिमे द्वंद्व, सत-असतक संघर्ष, धर्म-अधर्मक भिड़ंत—तँ अनंत कालसँ सृष्टिमे चलिते आयल अछि, किन्तु ओकरहु निस्तारक तिमिरक उपसंहारी 'भूमा निष्ठावंत' समय-समय पर अवतरित होइते छथि। 'राम-कृष्ण वा दया-विवेकक रूप-गुणक अनुरूप। सिद्ध-बुद्ध वा तिलक-सुभाषक भाषा-भाव अनूप ।।" रूपमे भारतभूमिमे 'भूमा निष्ठावंत'क परम्परा चलिते आयल अछि। जकर स्मृति-नीराजना

'अन्तर्नाद'क साधना थिक–'कते भगत इनक्लावी कते सुभाष हिन्द जय भाषी।
लौह पुरुष कत मानवता-एकात्मवाद विश्वासी ॥
सर्वोदयी भावना भावित जय भावेक प्रयासी।
प्रियदर्शिनी अखंड देशहित प्राणार्पण अभ्यासी ॥'

निष्ठावंत यावतो रुहानी संत, जेहादी मजहबी पैगंबर, वलिदानी देशभक्त, मानवताक प्रतिष्ठापक सिद्ध साधक ओ कलावंत, निष्ठावंत भूमाक प्रतीक व्यक्ति-समष्टि वन्दनीय-अभिनन्दनीय थिकाह।

भूमा– महतो महीयान् तात्त्विक सत्ता। अहनिस (अहर्निश)-दिनराति, दया-विवेक—दयानन्द-विवेकानन्द एवं परदुःखकातरता ओ विवेचनात्मक शक्ति। चतुरंत राज्य–चाणक्यक अनुसार भारतीय महाद्वीपक चारू सीमा धरि शासन। व्यक्ति-समाज समर्थ परस्पर– व्यक्ति ओ समाज तंतु-पट जकाँ संहत रूपें सार्थक। साध्य– जकरा सिद्ध कयल जाय, कार्य उद्देश्य।

(१५)

भरतवाक्यम्— भरत नाट्यक अधिष्ठाते नहि रसक प्रतिष्ठापक सेहो छथि। भारतीय साहित्यक अन्तिम शुभाशंसा 'भरतवाक्यम्' मे परम्परित रहल अछि। अन्तर्नादक 'भरतवाक्यम्'मे भंग-अभंग श्लेष मुखें आधुनिक भारत-निर्माता लोकनिक उल्लेख अछि, नाम योजना अछि। अन्तमे 'भव्य-भवाय विश्वहिताय' भारतमाताक प्रति नमन निवेदनसँ 'इति' होइछ जे जय घोषक 'अथ' सँ स्वर मिलबैछ, भारतीक आरती उतारैछ।

रामा-सानुज—-आचार्य रामानुज. अनुज लक्ष्मण सहित दाशरथि राम। शंकर—-शिव, आचार्यशंकर। मधु वल्लभ मध्वाचार्य वल्लभाचार्य। माधवी पदपल्लवा—- 'देहि पदपल्लवमुदारम्' गीतगोविन्दक पद संकेत, एवं सर्वदर्शनसंग्रहकार माधवक पल्लवित पद। एहि प्रकारें सामान्य अर्थक संग नित्यानन्द (सच्चिदानन्द ओ गौरांग महाप्रभु) राम-कृष्ण (अवतार ओ परमहंस) विवेक (तत्त्वविचार ओ विवेकानन्द) राममोहनतीर्थ (रामकृष्ण संबद्धस्थान ओ रामतीर्थ) सदयानन्द (दया आनन्द तथा दयानन्द स्वामी सहित) अन्य आधुनिक भारतनिर्माताक संधान स्पष्टे।

●